IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिलाएं और प्रकृति: स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण का एक पारिस्थितिक नारीवादी विश्लेषण

Rekha

सारांश: पारिस्थितिक नारीवाद एक विचारधारा और आंदोलन दोनों हैं जिसके दोहरे उद्देश्य माने जाते हैं पहला उद्देश्य स्त्री सशक्तिकरण करना है और दूसरा उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण करना है। यह विचार पारिस्थितिकी और नारीवाद का एक अनोखा मिश्रण पेश करता है जिसका उद्देश्य प्रकृति की रक्षा करना और प्रकृति के साथ बेहतर संबंध बनाना है। इसमें की प्रमुख भूमिका पर बल देकर प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करना भी है। यह वर्चस्व और पितृसत्तात्मकता के उसे सांचे पहलू पर चर्चा करता है जो महिलाओं और प्रकृति दोनों को अपने अधीन करता है। पर्यावरण संरक्षण मनुष्य जाति के सामने सबसे गंभीर मुद्दों में से एक है और मानव केंद्रित दृष्टिकोण से प्रकृति का संरक्षण करना रखा गया है। पितृस्तात्मक दृष्टिकोण पर आधारित यह मानव सभ्यता के भविष्य पर पड़ने वाले प्रभावों की फिक्र किए बिना, प्रकृति के नियंत्रण,दोहन और अधिकतम उपयोग की आज्ञा देता है। इस विनाशकारी प्रथा की आलोचना करते हुए पर्यावरण प्रबंधन की अवधारणा पर आधारित पारिस्थितिक नारीवाद की शुरुआत हुई, जो महिलाओं की स्थिति का समर्थन करता है। पारिस्थितिक नारीवाद एक ऐसी धारणा से शुरू होता है जिसमें महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले समाज में शून्य समझा जाता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि कैसे पारिस्थितिक नारीवाद की अवधारणा मीडिया के माध्यम से जन चेतना ,विशेष कर महिलाओं के बीच में प्रवेश कर सकती है। यह देखा गया है कि नारियों को पृथ्वी एवं प्रकृति के बारे में मर्दों से ज्यादा जानकारी होती है और वह पर्यावरण प्रबंधन में विशेषज्ञ के रूप में बेहतर योग्यता भी प्राप्त कर सकती हैं। भारत के संदर्भ में देखा जाए तो भारत के सबसे प्रमुख पर्यावरण आंदोलन जैसे कि चिपको आंदोलन, अपिको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन में दिखाई देता है कि स्त्री का पर्यावरण में योगदान कितना महत्वपूर्ण है इसीलिए इनका पर्यावरण नारीवादी भी माना जाता है (अभिजात 2023)।

इस शोध पत्र में नारी एवं प्रकृति के बीच में संबंध को जाना जाएगा, कुछ प्रमुख पारिस्थितिक नारीवादी विचारकों के विचारों को गहराई से समझा जाएगा एवं भारतीय संदर्भ में महिलाओं की भूमिका विश्लेषण किया जाएगा।

मुख्य बिंदु: पारिस्थितिकी नारीवाद, महिलाएँ, पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण

परिचय:

भारतीय संस्कृति में स्त्री को प्रकृति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। क्योंकि वह सृष्टि का निर्माण और पोषण करके उसे फलने फूलने देती है। शक्ति या शक्ति का प्रतीक होने के कारण वह सामाजिक व्यवस्था को भी संचालित करती है आई है। महिलाओं को हमेशा जैव विविधता की प्रमुख संरक्षक माना जाता है। वैदिक इ से ही भारतीय महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई और इतिहास में देखा जाए तो पुरुषों द्वारा महिलाओं एवं प्रकृति दोनों को अधीनस्थ संस्थाओं या वस्तुओं के रूप में माना गया है जो कि उनके बीच गहरी संबंध को भी दर्शाता है। यही निकटता महिलाओं को अपने पर्यावरण के प्रति अधिक पोषक भी बनाती है।

पारिस्थितिकी नारीवाद विभिन्न विचारों को भी सम्मिलित करता है लेकिन इसका मुख्य ध्यान पितृसत्तात्मक उत्पीड़न एवं महिलाओं और पर्यावरण से संबंधित सामाजिक व्यवस्था पर भी केंद्रित है। कुछ लोग इस निकटता भरे संबंध के पीछे महिलाओं के जीव विज्ञान को कारण बताते हैं और कुछ लोग संस्कृति और ऐतिहासिक कारकों को इसका श्रेय देते हैं। कुछ नारीवादी प्रकृति के उत्पीड़न एवं महिलाओं की अधीनता के बीच एक सीधा सा संबंध मानते हैं। पारिस्थितिक नारीवाद की अवधारणा के बारे में देखा जाए तो यह खुद प्राकृतिक दुनिया की सुंदरता की प्रति जागरूकता से प्रारंभ होती है। पारिस्थितिक नारीवाद कुदरती एवं प्राकृतिक स्थानों के क्षरण, प्रकृति और जैव विविधता में गिरावट और पारिस्थितिक आफ्त में बढ़ोतरी को स्वाभाविक रूप से नारीवादी चिंताओं के रूप में समझता है (नेल्सन, 2024)।

1990 के बाद मनुष्य जाति के सामने सबसे गंभीर मुद्दों में से एक पर्यावरणीय स्थिरता का मुद्दा रहा है और यह मुद्दा राष्ट्रीय सीमाओं से भी आगे निकल गया है अब यह विषय अंतरराष्ट्रीय मंच का मुद्दा है। देखा जाए तो दार्शनिक स्तर पर विशेष रूप से वन नियोजन और प्रबंधन के संदर्भ में लोग अक्सर खुद को प्रकृति के संबंध में सर्वोच्च अधिकारी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मानव खुद के बने हुए समाज में केंद्र में है और इसी को ध्यान में रखते हुए मनुष्य यह मानते हैं कि उनको जंगल पर प्रकृति पर शासन करने का संपूर्ण अधिकार है और प्रकृति एवं नई उसकी धरोहर है। मनुष्य के इस दृष्टिकोण ने अंततः कुप्रबंधन को जन्म दिया, इस प्रवृत्ति के कारण प्रकृति एवं वातावरण की स्थिति बिगड़ती ही जा रही है और देखा जाए तो यह विचारधारा मुख्य तौर पर पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण पर भी आधारित है जो मानव सभ्यता के भविष्य पर पड़ने वाले प्रभावों की परवाह किए बिना शोषण एवं प्रभुत्व की इच्छा से परिभाषित है(कोपनिना एट अल., 2018)।

मनुष्य के कार्यों के फलस्वरूप बच्चों, महिलाओं और अन्य वंचित समूहों, विभिन्न प्रकार के अल्पसंख्यक समूहों के साथ गलत व्यवहार और उपेक्षा की गई है। पितृसत्तात्मक अवधारणा निराशाजनक वास्तविकता को बढ़ावा देती है और वास्तव में पितृसत्तात्मक पर्यावरणीय हानि को भी दर्शाती है। मानव निर्मित समाज प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा प्रदान किए गए बुनियादी ढांचे पर निर्मित होते हैं लेकिन अब यह बुनियादी ढांचे मानवीय गतिविधियों के कारण प्रभावित हो रहे हैं। मानवीय प्रभाव आमतौर पर आर्थिक चिंताओं से प्रेरित क्रियाओं की ही एक श्रृंखला है जैसे कि लाभ के लिए भोजन उगाना, ज्यादा सुविधाजनक यात्रा के लिए वाहन चलाना, आराम के लिए इमारत को गर्म और ठंडा करना इत्यादि। इन सब क्रियो से मनुष्य पर्यावरणीय संसाधनों को खराब कर रहा है, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।

पारिस्थितिक नारीवाद की उत्पत्ति

पारिस्थितिक नारीवाद का मुख्य कार्य महिलाओं और पर्यावरण के बीच संबंधों का दस्तावेजीकरण करने के लिए प्रतिपादित किया गया था। इसमें पारिस्थितिक नारीवादी रोजमेरी रूथर ने जोर देकर कहा था कि यदि महिलाएं आजाद और स्वतंत्र होना चाहती हैं तो उन्हें प्रकृति के वर्चस्व को खत्म करने के बारे में सोचना पड़ेगा और यह तभी संभव होगा, जब महिलाएं और पर्यावरणविद् एक साथ मिल-जुलकर काम करेंगे। इसके साथ ही रोजमेरी रूथर ने ने पितृसत्तात्मक संरचनाओं और विचारों पर भी प्रश्न उठाए। यह माननीय है कि आधुनिक पारिस्थितिक नारीवादी आंदोलन का जन्म 1970 के दशक के अंत में हुआ। साल 1980 के दशक की शुरुआत में संयुक्त राज्य अमेरिका में शैक्षणिक और पेशेवर औरतों के एक गठबंधन द्वारा से हुआ था।1974 में फ्रांस्वा डी'ऑबोन, जिन्होंने पर्यावरण-क्रांति लाने के लिए "पारिस्थितिक नारीवाद" शब्द दिया।

फ्रांसीसी नारीवादी कट्टरपंथी फ्रांस्वा डी' ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति "नारीवाद या मृत्यु"(1980) में दो अलग-अलग माने जाने वाले आंदोलनों: पारिस्थितिकी और नारीवाद को इकट्ठा करने के लिए किया था। उन्होंने महिलाओं और प्रकृति के वर्चस्व के बीच अंतर संबंध देखें और उन्होंने उनको जोड कर देखा। उनका मानना था कि मनुष्य अपनी कोशिशों के साथ धरती को दुष्प्रभावों से बचा सकता है और दुष्परिणामों से मुक्ति कर सकता है। देखा जाए तो प्रकृति और महिलाओं की स्थिति एक जैसी है और प्राकृतिक वातावरण गैर मानवीय दुनिया और व्यवस्थित दुनिया के मध्य में उलझा हुआ है।

https://share.google/images/rJLAde6q3ZDqc7ZOY

नारीवाद और पर्यावरण वाद को दुनिया के सामने सम्मान बढ़ावा देना चाहिए। 1980 के दशक में उत्तरार्ध तक पारिस्थितिक नारीवाद एक लोकप्रिय आंदोलन भी बन चुका था जिसका मुख्य कारण नारीवादी सिद्धांत कर यनेस्ट्रा किंग के कार्यों का फल था क्योंकि एक लेख जो उन्होंने लिखा था जिसका शीर्षक 'सी व्हाट इस ईकोफेमिनिज्म' था। किंग ने इस के माध्यम से एक वैकल्पिक विश्व अवधारणा को जन्म दिया जहां पृथ्वी को पवित्र दर्जो दिया जाता है, वहीं दूसरी ओर पारिस्थितिक चेतना का आह्वान किया जाता है और महिलाओं एवं प्रकृति को परस्पर अंतर निर्मित असंख्य तरीकों से जुड़ा माना जाता है।

साहित्य समीक्षा

पारिस्थितिकी नारीवाद अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसे प्रकृति के लैंगिक आयाम पर प्रकाश डाला गया है जो बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है, लेकिन फिर भी अक्सर अनदेखा और अनसुना कर दिया जाता है इसे समझना बेहद जरूरी है क्योंकि उत्पादन, और प्रकृति हमेशा एक साथ चलते हैं (रंगराजन 2020)।

यालन (2007) के अनुसार महिलाएं और पर्यावरण आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं यदि हम ऐतिहास को देखते हैं तो औरतें को प्रकृति के सशक्त प्रतिमा के रूप में याद किया जाता रहा है। स्त्री को पौराणिक कथाओं में धरती माता, पृथ्वी देवी और चीनी इतिहास में 'मां नदी' के नाम से ही जाना जाता है। महिलाओं ने प्रकृति का प्रतीक बनकर प्रकृति को उसका अनंत अर्थ भी प्रदान किया इसीलिए जीवन की वॉक एवं संरक्षक के रूप में बच्चों का मार्गदर्शन करने वाली महिला के रूप में महिला को पर्यावरण के प्रति समर्पित होना चाहिए।

वंदना शिवा (1988) ने यह विचारपूर्ण तर्क दिया कि पारंपरिक भारतीय महिलाएं विशेष तौर पर ग्रामीण महिलाएं एवं आदिवासी महिलाएं प्रकृति के साथ सहअस्तित्व और सहयोग की भावना रखती हैं और उनके अनुसार यह महिलाएं प्रकृति को माता मानती हैं। वह संसाधनों का दोहन नहीं बल्कि संरक्षण करती हैं। इसके साथ ही वंदना शिवा मानती हैं कि प्रकृति एवं स्त्री दोनों को उपयोग व उपभोग की वस्तु के रूप में देखने की प्रवृत्ति पितृसत्तात्मक सोच से ही उपजी है। उन्होंने पारिस्थितिकी नारीवाद के विचार विमर्श में एक वैकल्पिक विकास मॉडल प्रस्तुत किया है जो की सहजीविता, स्थायित्व एवं जैव विविधता पर आधारित है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य साहित्यिक शोध के एक उभरते सिद्धांत के रूप में पेश करते हैं:

- महिलाओं और प्रकृति के पारंपरिक संबंध को समझना।
- पारिस्थितिक नारीवाद के दृष्टिकोण से पर्यावरण संरक्षण का विश्लेषण एवं अध्ययन करना।
- सतत विकास में महिलाओं की भूमिका और योगदान की पहचान करना और महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण स्थिरता को जोड़ने वाले सुझाव पेश करना

शोध पत्र की कार्यप्रणाली

इस शोध अध्ययन में मुख्य तौर पर द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्रिकाओं, रिपोर्टों और प्रामाणिक ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग किया गया है। शोध में वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण करके यह समझने की कोशिश की गई है कि महिलाओं और प्रकृति का संबंध कैसा है और किस प्रकार पारिस्थितिक नारीवाद के परिपेक्ष में पर्यावरण संरक्षण एवं स्थिरता को प्रभावित करता है।

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका

महिलाएं पर्यावरण संरक्षण में बहुत सारे तरीकों से योगदान दे सकती हैं और अपनी भूमिका निभा सकती हैं क्योंकि महिलाएं पर्यावरण के साथ बहुत सारे तरीकों से जुड़ी हुई हैं।

- जल संसाधन प्रबंधन: पुरुष अक्सर घरों से बाहर रहते हैं, उन्हें कम कांच के लिए अक्सर घरों से बाहर रहना पड़ता है लेकिन महिलाएं वास्तव में रोजाना दिनचर्या के लिए जल का उपयोग एवं प्रबंधन करती हैं। महिलाएं अक्सर

पानी लाने और उसका प्रयोग करने के लिए जिम्मेदार होती हैं। घर का रोजाना का काम जैसे की सफाई, खाना पकाना, कपड़े धोने के लिए, खेती के लिए भी महिलाएं पानी का प्रयोग करती हैं घरेलू स्तर पर जल संबंधी निर्णय लेने वाली एकमात्र व्यक्ति भी महिलाएं होती हैं। महिलाएं जल प्रबंधन को प्रभावित करती हैं तो समुदाय को बेहतर परिणाम मिलते हैं और इससे जल प्रणालियों विस्तृत पहुंचे एवं आर्थिक लाभ भी शामिल होते हैं।

- ठोस अपशिष्ट निपटान: आमतौर पर यह भी देखा जाता है कि लोग सब्जियां काटने, पोछा लगाने और फर्श साफ करने के बाद कूड़ा कचरा घरों के बाहर या नगर पालिका की सड़क पर फेंक देते हैं इससे प्रदूषण पैदा होता है और कीटाणु मक्खियों मच्छर भी पैदा होती हैं और तरह-तरह की बीमारियां भी फैलती हैं। घर का काम और घर के कचरे का प्रबंध अक्सर महिलाएं करती हैं अगर महिलाएं अपनी अच्छी आदत को विकसित करें तो वह अपने घरों को तो साफ रख पाएंगे लेकिन इससे उनके गांव शहर और आसपास का वातावरण भी स्वच्छ और स्वस्थ बनेगा। जैसे जनसंख्या की वृद्धि बहुत तेजी से हो रही है तो ठोस कचरे को डंपिंग साइट या और विकसित भूमि पर फेंक दिया जाता है। क्योंकि महिलाएं पर्यावरण के बहुत करीब होती हैं तो पर्यावरण की सफाई करके और उसे साफ रखकर पर्यावरण प्रबंधन में वह अपनी भूमिका निभा सकती हैं।
- जल निकास प्रबंधन: महिलाएं घर पर रहकर जल का प्रबंध करती हैं तो जल संबंधी समस्याओं में भी वह अपने आसपास की नालियों को साफ और कचरे से मुक्त बनाने के लिए सक्रिय रूप से भाग ले सकती हैं यह देखा जाता है कि घरों में नालियों की सफाई आमतौर पर महिलाओं द्वारा ही की जाती है (व्यूप एट अल, 2014)।
- बिजली का काम से कम प्रयोग: अक्सर यह देखा गया है कि पुरुष अक्सर घर से बाहर रहकर काम करते हैं और घरों की देखभाल महिलाएं ही करती हैं तो महिलाएं बिजली के न्यूनतम उपयोग में प्रभावकारी भूमिका निभाती है क्योंकि वह अपने घर की प्रबंधक होती हैं तो वह बिजली का कम से कम प्रयोग करके पर्यावरण को बचा सकती हैं।
- ऊर्जा के गैर पारंपरिक स्रोतों का उपयोग: पारंपरिक ऊर्जा के साधन सीमित है। अधिकांश जनसंख्या ईंधन के लिए वनों पर निर्भर है जो की प्रकृति के विनाश एवं पारिस्थितिकी तंत्र के विघटन का मुख्य कारण है। भारत एक विकासशील देश है और इसमें महिलाएं आसपास के जंगलों में ईंधन के लिए लड़कियां इकट्ठी करती हैं और घरेलू कामों के लिए उसे प्रयोग करती हैं अपने परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए कहीं-कहीं उन्हें बेच भी रही हैं। अगर महिलाएं इस दिशा में चाहे तो अपना योगदान कर सकती हैं जैसे कि सौर ऊर्जा लाइट, सौर गीजर, सौर कुकर इत्यादि दुआ राहत चूल्हे आदि का उपयोग करके आगे आ सकती हैं।
- बच्चों की अच्छी आदतों को विकसित करना: यह तथ्य हमेशा ही विद्यमान है की मां बच्चे की पहली शिक्षिका होती हैं, माही बच्चों के व्यक्ति तब के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मैन अगर चाहे तो बच्चे में शुरू से ही पर्यावरण के प्रति अच्छी आदतों को विकसित कर सकती है जैसे कि इधर-उधर नहीं थूकना, कूड़े कचरे को ना फैलाना, प्रकृति से प्रेम करना और प्रकृति का सम्मान करना, कागज को बर्बाद ना करना चीजों को साफ सुथरा रखना, बाग बगीचे को नुकसान न पहुंचना, पेड़ों से प्रेम करना इत्यादि। मां बच्चों की बुरी आदतों पर नजर रख सकती है और इस तरह वह पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित कर सकती है।

- न्यूनतम रसोई: पारंपरिक समय में रसोईघर का केंद्र बिंदु थी। पुराने जमाने से ही रसोई की आज एक पवित्र स्थान होने के साथ-साथ भोजन तैयार करने का स्थान भी थी। लेकिन डिजिटल दुनिया में रसोई की अब कोई कदर नहीं रह गई है और खाना बनाने की कला भी लुप्त कला बनकर रह गई है। इसी वजह से प्राकृतिक संसाधनों का लगातार दोहन हो रहा है और भोजन की कमी होती जा रही है। महिलाएं अगर चाहे तो सादगी और सावधानी से कदम उठा सकते हैं और रसोई के लिए अच्छा ईंधन प्रयोग करके पर्यावरण को सुरक्षित बना सकती हैं।
- टिकाऊ फैशन: घरेलू जिम्मेदारियों के प्रबंधन में हमेशा ही नारियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है क्योंकि ज्यादातर फैसला महिलाओं को ही लेने पड़ते हैं। महिलाएं अगर चाहे तो मिनिमलिस्ट फैशन के लिए बेहतरीन क्वालिटी का कपड़ा प्रयोग कर सकती हैं जो कि आमतौर पर कपड़ों से ही बना होता है इसलिए यह पर्यावरण के अनुकूल आरामदायक और अच्छी गुणवत्ता वाला होता है। महिलाएं एक कपड़े प्रयोग कर सकती हैं जिनका निर्माण बहुत कम प्रदूषण फैलता है। एको फैशन ऐसे कपड़े के निर्माण करने में है जो पर्यावरण उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को देखकर बनाया जाता है, यह कपड़ा कपास, भांग, बांस, जैविक ऊन, रेशम का प्रयोग करके बनाए जाते हैं।
- पर्यावरण अनुकूल सफाई: महिलाओं को लिक्विड सिलिकॉन से बने ड्राई क्लीनर का उपयोग करना चाहिए क्योंकि यह पर्यावरण के लिए उपयोगी साबित होते हैं और औरतें ही इनका समझदारी से प्रयोग कर सकती हैं और वही इस मामले में जागरूकता फैला सकती हैं।
- केंद्रीय परिवार की अवधारणा: संसार में जनसंख्या विस्फोट एक बड़ी समस्या है। भारत एक ऐसा देश है जो की जनसंख्या के मामले में सारे देशों से आगे है। अगर महिलाएं चाहे तो अपने व्यक्तिगत स्तर पर केंद्रीय परिवार के मानदंडों का पालन करके अपनी जिम्मेदारी उठा सकती हैं और प्रदूषण को नियंत्रित करने में भी मदद कर सकती हैं।
- हरित उपभोक्तावाद: महिलाएं भविष्यत पीढ़ियों के लिए पर्यावरण की सुरक्षा के अनुकूल चल सकती हैं वह पर्यावरण के अनुकूल व्यवहारों को अपनाकर पर्यावरण की मुश्किलों का समाधान करने की जिम्मेदारी ले सकती हैं जैसे की जैविक उत्पादों का उपयोग करके वह हरित उपभोक्तावाद को नियंत्रित रख सकती हैं।
- बागबानी का शौक विकसित करके वातावरण को हरा भरा बनाना: आजकल महिलाएं बागवानी का शौक विकसित करके आगे आ रही है वह छोटे से छोटे घरों में पौधे रखकर पर्यावरण को स्वस्थ तो रखनी ही है साथ में घर की भी शोभा बढ़ा देती हैं। यह पौधे आंखों को ताजगी देते हैं और आसपास को भी साफ-सुथरा रखने हैं। महिलाएं अपना प्रबंधन श्रमता का उपयोग करके खाली डिब्बे, खाली बोतलें, टीन आदि को गमले के रूप में पौधे उगाने के लिए प्रयोग कर सकती हैं।

सुझाव

- पर्यावरणीय नीतियों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना: पर्यावरणीय नीतियों के निर्माण और क्रियान्वयन में महिलाओं की भागीदारी बहुत ही ज्यादा जरूरी है क्योंकि अक्सर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाएं केवल लाभार्थी के रूप में देखी जाती हैं। जबकि उनकी भूमिका नीतियों के निर्धारण में अहम साबित हो सकती हैं। महिलाएं पर्यावरण के बहुत करीब होती हैं तो उनके अनुभव एवं आवश्यकताओं को पर्यावरणीय संकटों के प्रति

अधिक व्यावहारिक एवं टिकाऊ समाधान के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसीलिए महिलाओं की जानकारी और समझ को नीतियों में शामिल किया जाना चाहिए ताकि योजनाएं अधिक प्रभावशाली और समावेशी बन सके।

- ग्रामीण महिलाओं के पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण एवं नीति निर्माण में जोड़: ग्रामीण और आदिवासी महिलाएं प्रकृति के साथ शहर अस्तित्व की परंपरा निभाती आ रही हैं। क्योंकि वर्तमान समय में टिकाऊ विकास की आवश्यकता महसूस हो रही है तो महिलाओं के ज्ञान को सुरक्षित किया जाना चाहिए और नीतिगत निर्णय में सम्मिलित करना चाहिए।
- शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पारिस्थितिक नारीवाद दृष्टिकोण को सम्मिलित करना: शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पारिस्थितिक नारीवाद को शामिल करके एक सशक्त सामाजिक भूमिका निभाने में सक्षम हुआ जा सकता है क्योंकि पारिस्थितिक नारीवाद हमें यह सिखाता है कि प्रकृति और स्त्री दोनों के शोषण की जान सामान सत्ता संरचना में है और इस क्षण को चुनौती देने के लिए वैकल्पिक सोच की जरूरत है। शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं को इन चीजों के लिए तैयार किया जा सकता है।
- महिला नेतृत्व वाले पर्यावरणीय आंदोलन का समर्थन: इतिहास में झांक जाए तो बहुत सारे प्रभावशाली पर्यावरणीय आंदोलन का नेतृत्व महिलाओं ने किया है चाहे वह उत्तराखंड का चिपको आंदोलन हो या मध्य भारत का नर्मदा बचाओ आंदोलन हो। महिलाओं के नेतृत्व में चलने वाली यह आंदोलन केवल पर्यावरण की रक्षा ही नहीं करते बल्कि सामाजिक न्याय, आजीविका मानव अधिकार जैसे मुद्दों को भी आगे लाते हैं। इसीलिए बहुत जरूरी है कि इन आंदोलन को वित्तीय एवं कानूनी सहायता मिले और इनका समर्थन भी किया जाए। समाज में इनको स्वीकृति होना बहुत ही ज्यादा जरूरी है। सरकार, गैर सरकारी संगठन और सोशल मीडिया को चाहिए कि वह महिला नेतृत्व को पहचाने और उन्हें एक मंच प्रदान करें ताकि महिलाओं में भी सशक्तिकरण मिले और पर्यावरणीय संघर्षों को एक नई दिशा मिले।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र के जरिए यह स्पष्ट हुआ कि नारियों और प्रकृति के बीच में एक गहरा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंध रहा है जिसे पारिस्थितिक नारीवाद एक विचार ढांचे में प्रस्तुत करते हैं। पारंपरिक समाज में महिलाएं न केवल पर्यावरण से जुड़ी रही है बल्कि वह इसके संरक्षण एवं पुनरुत्थान में भी प्रमुख वाहक रही है। महिलाओं में जल संग्रहण तकनीक, जैव विविधता संरक्षण का ज्ञान यह सारे सतत विकास की दिशा में अत्यंत मूल्यवान विचार हैं। बहुत सारे विचारकों ने अपने अध्ययन के द्वारा दर्शाया है कि स्त्री और प्रकृति दोनों ही हाशिए पर हैं। पर्यावरणीय संकट केवल तकनीकि नहीं बल्कि सामाजिक एवं लैंगिक संकट भी है। अगर हम टिकाऊ एवं न्याय संगत विकास की ओर जाना चाहते हैं तो हमें औरतों की भूमिका को नीतियों आंदोलन एवं शैक्षिक ढांचे में सक्रिय रूप से शामिल करना पड़ेगा तभी प्रकृति का संरक्षण हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आदित्य, एस. के. (2016)। "पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका." *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ पोलिटिकल साइंस & डेवलपमेंट,* 4(4), 140–145।

2. असनानी, बी. (2021)। "इकोफेमिनिज़्म: पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका." ए. एडिटर (संपादक), *पर्सपेक्टिव्स ऑन इकोफेमिनिज़्म* (पृ. 109–120)।

3. एटवुड, म. (2011)। *द हैंडमेड्स टेल.* लंदन: विंटेज।

4. बकिंगहम, एस. (2004)। "बीसवीं सदी में इकोफेमिनिज़्म." *द जियोग्राफिकल जर्नल,* 170(2), 146–154।

5. बिर्के, ल. (1986)। *महिलाएँ, फेमिनिज़्म और जीवविज्ञान: फेमिनिस्ट चुनौती.* हार्वेस्ट प्रेस।

6. बिर्केलैंड, जे. (1993)। "इकोफेमिनिज़्म: सिद्धांत और व्यवहार का संबंध." जी. गार्ड (संपादक), *इकोफेमिनिज़्म: महिलाएँ, जानवर, प्रकृति* (पृ. 13–59). टेम्पल यूनिवर्सिटी प्रेस।

7. बिगवुड, क. (1991)। *अर्थ म्यूज़: फेमिनिज़्म, प्रकृति और कला.* टेम्पल यूनिवर्सिटी प्रेस।

8. बाइल, जे. (1991)। *इकोफेमिनिस्ट राजनीति पर पुनर्विचार.* साउथ एंड प्रेस।

9. डी'ओबॉन्ने, एफ. (2013)। *फेमिनिज़्म या मृत्यु.* ई. मार्क्स & आई. डी. कोर्टिव्रॉन (संपादक), *न्यू फ्रेंच इकोफेमिनिज़्म.* ब्रिटानिका कंपनी।

10. चिन्स्या, बी. (2024)। "महिलाएँ और प्रकृति: पर्यावरण संरक्षण स्थिरता का इकोफेमिनिस्ट अध्ययन." *अन-निसा: जर्नल ऑफ़ जेंडर स्टडीज़,* 17(2), 165–180।

11. डेवियन, वी. (1994)। "क्या इकोफेमिनिज़्म फेमिनिस्ट है?" के. जे. वॉरेन (संपादक), *इकोलॉजिकल फेमिनिज़्म* (पृ. 8–28). रूटलेज।

12. डायमंड, सी. (2017)। "चार महिलाएँ और शब्द: इकोफेमिनिस्ट दृष्टिकोण में जंगल को घर के रूप में देखना." *कंपेरेटिव ड्रामा*, 51(1), 71–100।

13. इवांस, आर. (2015)। "जेम्स टिपट्री जूनियर: 1970 के दशक में एसेंशियलिज़्म और इकोफेमिनिज़्म का पुनरीक्षण." *वुमेन'स स्टडीज़ क्वार्टरली*, 43(3), 223–239।

14. फिलिपोन, सी. (2013)। "लिंडा स्टीन के कार्य में पारिस्थितिक प्रणाली की सोच." *वुमन'स आर्ट जर्नल*, 34(1), 13–20।

15. गार्ड, जी. (1993)। *इकोफेमिनिज़्म: महिलाएँ, जानवर, प्रकृति*. टेम्पल यूनिवर्सिटी प्रेस।

16. गार्ड, जी. (2015)। "इकोफेमिनिज़्म और जलवायु परिवर्तन." *वुमेन'स स्टडीज़ इंटरनेशनल फोरम*, 49, 20–33।

17. ग्लोटफेल्टी, सी. (1996)। *इकोक्रिटिसिज़्म रीडर: साहित्यिक पारिस्थितिकी में लैंडमार्क्स*. यूनिवर्सिटी ऑफ़ जॉर्जिया प्रेस।

18. ग्रॉस, एम. आर. (2011)। "बौद्ध धर्म और इकोफेमिनिज़्म: बौद्ध पारिस्थितिकी और पश्चिमी विचार की जटिलताएँ." *जर्नल फॉर द स्टडी ऑफ़ रिलिजन*, 24(2), 17–32।

19. हब्बेन, के. (2013)। "जानवर और अव्यक्त: मार्था सैंडवाल-बर्गस्ट्रॉम की कुल्ला-गुल्ला सीरीज़ में परस्पर जुड़े जीवन." *बार्नबोकेन*, 36(1), 1–15।

20. लाहार, एस. (1991)। "इकोफेमिनिस्ट सिद्धांत और ग्रासरूट राजनीति." *हाइपैटिया*, 6(1), 28–47।

21. मर्चेंट, कै. (1980)। *प्रकृति की मृत्यु: महिलाएँ, पारिस्थितिकी, और वैज्ञानिक क्रांति*. न्यूयॉर्क: हार्परवन।

22. मर्चेंट, कै. (1990)। "इकोफेमिनिज़्म और फेमिनिस्ट सिद्धांत." आई. डायमंड & जी. एफ. ओरेंसटीन (संपादक), *रीवीविंग द वर्ल्ड: द इमरजेंस ऑफ़ इकोफेमिनिज़्म* (पृ. 100–105). सिएरा क्लब बुक्स।

23. माथाई, डब्ल्यू. (1992)। "केन्या का ग्रीन बेल्ट मूवमेंट." *यूनेस्को कूरियर*, 45(3)।

24. मूअर, न. (2015)। *द चेंजिंग नेचर ऑफ़ इको/फेमिनिज़्म: टेलिंग स्टोरीज़ फ्रॉम कैलयोकोट साउंड.* यूबीसी प्रेस।

25. नीलसन, टी. (2023)। "इकोफेमिनिज़्म." *फिलॉसफी, इकोलॉजी, फेमिनिज़्म & फेमिनिस्ट थ्योरी.* यूनिवर्सिटी ऑफ़ ग्लासगो।

26. ओज़तुर्क, वाई. एम. (2020)। "इकोफेमिनिज़्म का अवलोकन: महिलाएँ, प्रकृति और पदानुक्रम." *JASS स्टडीज़- द जर्नल ऑफ़ अकादमिक सोशल साइंस स्टडीज़,* 81, 705–714।

27. प्लमवुड, वी. (2002)। *फेमिनिज़्म और प्रकृति पर अधिकार (1st ed.).* टेलर & फ्रांसिस।

28. रैनी, एस. ए., & ग्लेन, एस. जे. (2009)। "ग्रासरूट्स एक्टिविज़्म: पर्यावरण न्याय आंदोलन में रंगीन महिलाओं की भूमिका का अन्वेषण." *रेस, जेंडर & क्लास,* 16(3/4), 144–173।

29. रॉय, अभिजात, एस. (2023, 12 जून)। "महिलाएँ और प्रकृति: भारतीय संदर्भ में इकोफेमिनिज़्म का स्थान." *इंडिका टुडे.* https://www.indica.today/research/conference/women-and-nature-locating-ecofeminism-in-indian-context/

30. रंगराजन, एम. (2020, 8 फरवरी)। *टाइम्स ऑफ़ इंडिया,* अहमदाबाद एड।

31. शर्मा, आर., & कौशिक, बी. (2011)। "पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका." *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिप्लिनरी मैनेजमेंट स्टडीज़,* 1(2), 162–167।

32. स्टर्ज़न, एन. (1997)। "जाति की प्रकृति: इकोफेमिनिज़्म में नस्लीय भिन्नता की चर्चाएँ." के. जे. वॉरेन (संपादक), *इकोफेमिनिज़्म: महिलाएँ, संस्कृति, प्रकृति* (पृ. 260–278). इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस।

33. टैल्लमैज, जे., & हेनरी, एच. (2000)। "परिचय." *रीडिंग अंडर द साइन ऑफ़ नेचर: न्यू एसेज़ इन इकोक्रिटिसिज़्म* (पृ. 1–14). यूनिवर्सिटी ऑफ़ यूटाह प्रेस।

34. ट्वाइन, टी. आर. (2001)। *इकोफेमिनिज़्म इन प्रोसेस.*

35. वॉरेन, के. जे. (1994)। "परिचय." के. जे. वॉरेन (संपादक), *इकोलॉजिकल फेमिनिज़्म* (पृ. 1–8). रूटलेज।

36. वॉरेन, के. जे. (संपादक) (1997)। *इकोफेमिनिज़्म: महिलाएँ, संस्कृति, प्रकृति.* इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस।

37. शिवा, व. (1988)। *स्टेइंग अलाइव: महिलाएँ, पारिस्थितिकी और उत्तरजीविता (परिचय).* वुमेन अनलिमिटेड, नई दिल्ली।

38. शिवा, व. (1988)। *स्टेइंग अलाइव: महिलाएँ, पारिस्थितिकी और विकास.* लंदन: ज़ेड बुक्स।

39. शिवा, व. (2005)। *बीजों की राजनीति.* नई दिल्ली: पुस्तक प्रकाशन।

40. मीस, म., & शिवा, व. (1993)। *इकोफेमिनिज़्म.* ज़ेड बुक्स।

41. मर्चेंट, कै. (1980)। *प्रकृति की मृत्यु: महिलाएँ, पारिस्थितिकी, और वैज्ञानिक क्रांति.* न्यूयॉर्क: हार्परवन।

42. यालन, ज़. (2007)। "महिलाओं की पर्यावरण संरक्षण संगठनों में भागीदारी: ऑस्ट्रेलियाई महिलाओं की ग्रीन एनजीओ में भागीदारी का गुणात्मक अध्ययन." अप्रकाशित मास्टर थीसिस, बीजिंग फॉरेन स्टडीज़ यूनिवर्सिटी।

43. वुइप, ज़., सोलोमन, सी., डंग, विंसेंट एच., बुहारी, अरिन एच., मडकी, डालोएंग & बिट्रस बमिंडा, ए. (2014)। "महिलाओं की पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन में भागीदारी: प्लेटो स्टेट, नाइजीरिया से पाठ." *अमेरिकन जर्नल ऑफ़ एनवायरनमेंटल प्रोटेक्शन,* 2(2), 32–36।